**Today’s Poem – 02.10.2014**

**सतगुरू की पहली-पहली श्रीमत है देही- अभिमानी बनो**

**देह- अभिमान छोड़ो**

**इन आखों से जो कुछ देखते हैं वह विनाश है होना**

**अब तुम्हें कुछ भी नहीं चाहिए, बिल्कुल बेगर है बनना**

**इस बेहद नाटक में एक्ट करते हुए सारे नाटक को साक्षी होकर देखना**

**इसमें नहीं मूँझना**

**इस दुनिया की कोई भी चीज़ देखते हुए भी ना देखना**

**अपने आसुरी स्वभाव को बदल दैवी स्वभाव धारण करना**

**एक-दो का मददगार होकर चलना**

**किसी को तंग नहीं करना**

**महान आत्मा अर्थात् सेंट उसे कहेंगे**

**जो व्यर्थ या माया से इनोसेंट होंगे**

**फर्स्ट डिवीजन में आना**

**तो ब्रह्मा बाप के कदम पर कदम रखना**

**ओम् शान्ति**

**मेरा बाबा**

****